

पैन पॉवर

हिंदी दैनिक समाचार पत्र



वर्ष - 1 अंक - 92

रविवार, अक्टूबर 18, 2026

विशाखापट्टनम संपादक: गंट्यादा अप्पाराव

पृष्ठों. 4मूल्य. 1रु

शांति बॉन्ड भरकर अभिजीत दीपके रिहा

नयी दिल्ली (एजेंसी): दिल्ली की एक अदालत ने शनिवार को कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के संस्थापक अभिजीत दीपके को सशर्त रिहा करने का आदेश दिया। कथित चुनावी धांधली के खिलाफ जारी विरोध 1 प्रदर्शनों के तहत कर्नाट प्लेस में प्रस्तावित मार्च में शामिल होने की तैयारी के दौरान शुक्रवार को उन्हें हिरासत में लिया गया था और बाद में गिरफ्तार कर लिया गया था। जानकारी के अनुसार, अदालत ने दीपके को 50 हजार रुपये का बॉन्ड भरने और शांति भंग नहीं करने का लिखित आश्वासन देने का निर्देश दिया। मजिस्ट्रेट के सम्म सुनवाई पूरी होने के कुछ ही देर बाद वह मंदिर मार्ग पुलिस थाने से बाहर आ गए। रिहाई के बाद अपनी पहली प्रतिक्रिया में दीपके ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर वर्ष 2004 की फिल्म ‘वीर-जारा’ में शाहरुख खान के किरदार की एक तस्वीर साझा की। फिल्म में यह किरदार पाकिस्तान की जेल में 22 साल बिताने के बाद रिहा होता है और भावुक नजर आता है। दीपके ने तस्वीर के साथ लिखा, “बिना वाई-फाई और फोन के 24 घंटे जेल में

बिताने के बाद बाहर निकलने पर कैसा महसूस होता है।” दीपके के अलावा अखिल भारतीय छात्र संघ (आइसा) की अध्यक्ष नेहा बोरा भी शुक्रवार को हिरासत में ली गई प्रमुख युवा नेताओं में शामिल थीं। बोरा को शनिवार तड़के रिहा कर दिया गया, जबकि दीपके को विशेष कार्यकारी मजिस्ट्रेट के सम्म पेश किया गया। दिल्ली पुलिस ने इसकी पुष्टि की। इस बीच, सीजेपी नेता आशुतोष रांका और सौरव दास जंतर-मंतर पर अनधिकृत प्रवेश के आरोप में न्यायिक हिरासत में हैं। उल्लेखनीय है कि पिछले सप्ताह जंतर-मंतर की अहिंसाूचित विरोध प्रदर्शन स्थल की मान्यता समाप्त कर दी गई थी। पुलिस के अनुसार, शुक्रवार शाम कर्नाट प्लेस में प्रस्तावित ‘लहरा दो तिरंगा’ विरोध मार्च से पहले नेहा बोरा और अभिजीत दीपके को एहतियातन हिरासत में लिया गया था। इस मार्च के दौरान प्रदर्शनकारियों ने राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा लहराने की योजना बनाई थी। हालांकि पुलिस की कार्रवाई के बावजूद छात्रों और नामंकन दाखिल करने के लिए बंगाली प्रदर्शनकारियों ने तिरंगा लेकर छोटे-छोटे मार्च निकाले। दिल्ली पुलिस ने बताया कि

नेहा बोरा को दिल्ली पुलिस अधिनियम के तहत हिरासत से संबंधित औपचारिकताएं पूरी करने के बाद रिहा कर दिया गया। वहीं, अभिजीत दीपके को भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) की धारा 126 और 170 के तहत शांति भंग करने से संबंधित एक नए मामले में औपचारिक रूप से गिरफ्तार किया गया था। इससे पहले 10 अक्टूबर को दिल्ली हवाई अड्डे पर एक विमान के अंदर से दीपके को हिरासत में लिया गया था। उस समय भी उनके खिलाफ शांति भंग करने का अलग मामला दर्ज किया गया था। उनसे एक वर्ष तक शांति भंग नहीं करने का आश्वासन देते हुए बॉन्ड पर हस्ताक्षर कराए गए थे। इस बीच, रिहाई के बाद नेहा बोरा ने दिल्ली पुलिस और केंद्र की भाजपा सरकार की कड़ी आलोचना की। उन्होंने हिरासत में लिए जाने की कार्रवाई को अवैध बताया। बोरा ने मतदाता सूचियों के विवादास्पद विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को तत्काल समाप्त करने की मांग की। साथ ही मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे और उन्हें जेल भेजने की भी

मांग की। समाचार एजेंसी पीटीआई से बातचीत में बोरा ने कहा, “मुझे मंडी हाउस से हिरासत में लिया गया और पूरी रात, सुबह पांच बजे तक पुलिस थाने में रखा गया। पुलिस इस तरह की अवैध हिरासत की कार्रवाई क्यों कर रही है?” उन्होंने आगे कहा, “इस देश में लंबे समय से ऐसी घटनाएं हो रही हैं। मौजूदा विरोध आंदोलन ने स्पष्ट रूप से दिखा दिया है कि किस प्रकार लोगों को हिरासत में लिया जा रहा है। इस आंदोलन ने ऐसी कार्रवाइयों को उजागर किया है।” बोरा ने आरोप लगाया, “पुलिस दावा करती है कि वह कानून-व्यवस्था का पालन करती है और सभी कार्रवाई नियमों के अनुसार करती है, लेकिन वास्तव में ऐसा कुछ नहीं हो रहा है।” आइसा अध्यक्ष ने अभिजीत दीपके सहित हिरासत में लिए गए या गिरफ्तार किए गए सभी प्रदर्शनकारियों को तत्काल रिहा करने की मांग की। दूसरी ओर, चुनाव आयोग का कहना है कि उसके सभी निर्णयों को सर्वोच्च न्यायालय की पहले ही मंजूरी मिल चुकी है। वहीं, भाजपा ने विपक्षी दलों,

हिंदूपुर नगरपालिका अध्यक्ष पद के लिए टीडीपी गठबंधन उम्मीदवार पी.एस. मंजुनाथ ने दाखिल किया नामांकन

(पेन पॉवर न्यूज़): **हिंदूपुर:** श्री सत्यसाई जिले के हिंदूपुर नगरपालिका अध्यक्ष पद पर जीत हासिल करने के लिए टीडीपी के नेतृत्व वाले गठबंधन ने अपनी तैयारियां तेज कर दी हैं। इसी क्रम में टीडीपी गठबंधन के उम्मीदवार पी.एस. मंजुनाथ ने भव्य रैली के साथ नगरपालिका अध्यक्ष

पद के लिए अपना नामांकन दाखिल किया। मंजुनाथ ने अपनी जीत पर विश्वास जताते हुए कहा कि हिंदूपुर के विधायक नंदमूरि बालकृष्ण ने उन पर जो भरोसा जताया है, उसे वे टूटने नहीं देंगे और नगरपालिका चुनाव में जीत हासिल करेंगे। विधायक बालकृष्ण के निर्देशों के अनुसार,

जांच पूरी होने तक राजनीति से दूर रहें जगन: सोमिरेड्डी

(पेन पॉवर न्यूज़): **नेल्लोर, 17 अक्टूबर:** विधायक सोमिरेड्डी चंद्रमोहन रेड्डी ने आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री वाई.एस. जगन मोहन रेड्डी पर तीखा हमला बोला। उन्होंने जगन को भारतीय राजनीति का एक अनोखा उदाहरण बताते हुए कहा कि देश में इतने अहिंसाक मामलों में आरोपी शायद ही कोई अन्य नेता होगा। उन्होंने आरोप लगाया कि जगन के खिलाफ इतने मामले हैं कि उनकी जांच के लिए सीबीआई और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के पास भी पर्याप्त समय नहीं होगा। सोमिरेड्डी ने आरोप लगाया कि तिरुमला श्रीवारी के पवित्र प्रसाद में मिलावटी घी का इस्तेमाल कर उसकी पवित्रता को भंग करने के लिए जगन और उनके सहयोगी जिम्मेदार हैं। उन्होंने दावा किया कि ईडी की जांच से मिलावटी घी मामले

की पूरी सच्चाई सामने आ रही है। उन्होंने कहा कि सीबीआई अदालत में रोजाना सुनवाई शुरू होने से जगन को अब नियमित रूप से अदालत के चक्कर लगाने पड़ेंगे। उन्होंने मांग की कि यदि जगन में वास्तव में नैतिकता और ईमानदारी है, तो उन्हें अपने खिलाफ चल रहे मामलों की जांच और सुनवाई पूरी होने तक राजनीति से दूर रहना चाहिए। सोमिरेड्डी ने आरोप लगाया कि जगन ने अपने पिता की राजनीतिक सत्ता का दुरुपयोग कर 43 हजार करोड़ रुपये की अवैध संपत्ति अर्जित की थी। उन्होंने कहा कि इस मामले में अब सीबीआई अदालत में रोजाना सुनवाई की स्थिति आ गई है। उन्होंने बताया कि मिलावटी घी मामले में आरोपों का सामना कर रहे व्यक्तियों और संस्थाओं की 130 करोड़ रुपये की संपत्तियां ईडी ने कुर्क की हैं।

पुलिवेंदुला में तनाव: एसपी ने सांसद अविनाश रेड्डी को दी गिरफ्तारी की चेतावनी

(पेन पॉवर न्यूज़): **कडपा, 17 अक्टूबर:** स्थानीय निकाय चुनावों के लिए नामांकन दाखिल करने के दौरान पुलिवेंदुला में तनावपूर्ण स्थिति पैदा हो गई। सांसद अविनाश रेड्डी के नेतृत्व में बड़ी संख्या में वाईएसआरसीपी कार्यकर्ता पुलिवेंदुला स्थित नामांकन केंद्र के पास एकत्र हो गए। स्थिति का जायजा लेने के लिए कडपा के पुलिस अधीक्षक नविकेत विश्वनाथ पुलिवेंदुला पहुंचे। नामांकन दाखिल करने की समय सीमा समाप्त होने के कारण एसपी ने कडपा के सांसद अविनाश रेड्डी को वहां से चले जाने का निर्देश दिया। साथ ही चेतावनी दी कि यदि वे वहां से नहीं हटें तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया जाएगा। एसपी की चेतावनी के बाद सांसद अविनाश रेड्डी ने वाईएसआरसीपी कार्यकर्ताओं को वहां से हटने का निर्देश दिया। इसके बाद



सांसद भी मौके से चले गए। इस बीच, पुलिवेंदुला के नामांकन केंद्र के पास टीडीपी और वाईएसआरसीपी कार्यकर्ताओं के बीच तीखी नोकझोंक हुई। नामांकन दाखिल करने के लिए बड़ी संख्या में वाईएसआरसीपी कार्यकर्ता केंद्र पर पहुंचे थे। हालांकि, पुलिस द्वारा पहले से

वहां मौजूद टीडीपी कार्यकर्ताओं को प्राथमिकता के आधार पर नामांकन दाखिल करने की अनुमति देने की बात कहने पर विवाद शुरू हो गया। देखते ही देखते विवाद हिंसक झड़प में बदल गया और दोनों दलों के कार्यकर्ताओं ने एक-दूसरे पर पथराव किया। स्थिति को

किराए के गुंडों से जनता को डराने की कोशिश बर्दाश्त नहीं करेंगे: मंत्री मंडिपल्ली का वाईएसआरसीपी पर हमला

(पेन पॉवर न्यूज़): **रायचोटी, 17 अक्टूबर:** आंध्र प्रदेश के मंत्री मंडिपल्ली रामप्रसाद रेड्डी ने स्थानीय निकाय चुनावों के बीच रायचोटी में अवैध हथियारों की बरामदगी और 10 लोगों की गिरफ्तारी पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की। पुलिस ने इस मामले में रिवॉल्वर, पिस्तौल और गोलियां बरामद की हैं। मंत्री ने आरोप लगाया कि वाईएसआरसीपी नेता गडिकोटा श्रीकांत रेड्डी ने स्थानीय चुनावों में अशांति फैलाने के उद्देश्य से दिल्ली, हैदराबाद और पंजाब से आपराधिक गिरोहों को बुलाया है। उन्होंने सवाल किया कि आखिर ये लोग घातक हथियार लेकर रायचोटी में किसकी हत्या करने के इरादे से घूम रहे थे। उन्होंने मांग की कि श्रीकांत रेड्डी इस संबंध में स्पष्टीकरण दें। मंत्री ने पुलिस से यह भी मांग की कि श्रीकांत रेड्डी और गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों या कथित गिरोहों के बीच किसी तरह के संबंध हैं या नहीं, इसकी व्यापक जांच की जाए। मंडिपल्ली ने सवाल उठाया कि आंध्र प्रदेश के अन्य क्षेत्रों के विपरीत रायचोटी में चुनावी शांति



भंग करने के लिए कथित तौर पर ऐसे गिरोहों को क्यों बुलाया गया। उन्होंने स्थानीय निकाय चुनावों के दौरान पुलिस को पूरी तरह सतर्क रहने की सलाह दी। साथ ही चेतावनी दी कि अवैध हथियारों और किराए के गुंडों के जरिए जनता को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। मंत्री मंडिपल्ली रामप्रसाद रेड्डी ने मांग की कि इस घटना के पीछे शामिल वास्तविक लोगों की पहचान की जाए और दोषियों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाए।

संयुक्त कडपा जिले में नामांकन प्रक्रिया के दौरान तनाव, कई स्थानों पर झड़पें

(पेन पॉवर न्यूज़): **कडपा जिला, 17 अक्टूबर:** स्थानीय निकाय चुनावों के दौरान हिंसा और अशांति फैलाने के लिए वाईएसआर कांग्रेस पार्टी (वाईएसआरसीपी) के नेताओं द्वारा कथित तौर पर साजिश रचे जाने की खबरें सामने आ रही हैं। आरोप है कि आलोचकों द्वारा “कुल्हाडी पार्टी” कहे जाने वाले दल के नेताओं ने रायचोटी में एक अंतरराज्यीय आपराधिक गिरोह को बुलाया है। अपुष्ट खबरों के अनुसार, वाईएस जगन मोहन रेड्डी की पार्टी से जुड़े नेताओं ने पंजाब से घातक हथियारों के साथ कथित अपराधियों को बुलाया है। विभिन्न क्षेत्रों में अशांति फैलाने के लिए हथियारबंद गिरोहों को तैनात

किए जाने की भी खबरें हैं। शुक्रवार को रायचोटी के नामांकन केंद्र के पास वाईएसआरसीपी से कथित तौर पर जुड़े एक समूह ने हंगामा किया था। **बड़े पैमाने पर हिंसा फैलाने की कथित साजिश** खबरों के अनुसार, स्थानीय निकाय चुनावों में बड़े पैमाने पर हिंसा फैलाने के उद्देश्य से आपराधिक गिरोहों को सक्रिय किया गया है। वाईएसआरसीपी नेताओं पर आरोप है कि उन्होंने बिना लाइसेंस वाली बंदूकों और अवैध हथियारों के जरिए जनता में भय पैदा करने की योजना बनाई थी। इसी बीच, पुलिस ने रायचोटी

में दो बंदूकें और गोलियां जब्त कीं। अवैध हथियार रखने के आरोप में अंतरराज्यीय गिरोह के 10 कथित सदस्यों को गिरफ्तार किया गया। **गांधीनगर स्कूल नामांकन केंद्र पर तनाव** दूसरी ओर, संयुक्त कडपा जिले में नामांकन प्रक्रिया के दौरान तनावपूर्ण स्थिति बनी हुई है। कडपा शहर के गांधीनगर स्कूल स्थित नामांकन केंद्र के पास वाईएसआरसीपी और टीडीपी कार्यकर्ताओं के बीच झड़प हुई। दोनों पक्षों ने कथित तौर पर एक-दूसरे पर पथराव किया। आरोप है कि सैकड़ों वाईएसआरसीपी कार्यकर्ताओं ने टीडीपी कार्यकर्ताओं पर मिर्च पाउडर फेंका और पथरों से

हमला किया। राजमपेट में वाईएसआरसीपी विधायक अमरनाथ रेड्डी के समर्थक कथित तौर पर लाठियां और पथर लेकर नामांकन केंद्र पहुंचे। टीडीपी कार्यकर्ताओं द्वारा उन्हें रोकने का प्रयास करने पर दोनों पक्षों के बीच टकराव की स्थिति पैदा हो गई। रायचोटी में भी तनावपूर्ण स्थिति बनी हुई है।

येमिंगनूर नगरपालिका अध्यक्ष पद को लेकर वाईएसआरसीपी में गुटबाजी कुरनूल जिले के येमिंगनूर में नगरपालिका अध्यक्ष पद को लेकर वाईएसआरसीपी के भीतर विवाद खड़ा हो गया है। पार्टी के नेता दो गुटों में बंट गए हैं। एक गुट राजीव रेड्डी का है, जबकि दूसरा गुट बुद्धा रेणुका का बताया जा रहा है। वाईएसआरसीपी के आधिकारिक नगरपालिका अध्यक्ष पद के उम्मीदवार के रूप में डॉ. रघु ने नामांकन दाखिल किया। वहीं, बुद्धा रेणुका गुट की ओर से पूर्व नगरपालिका उपाध्यक्ष नजीर अहमद ने भी अपना नामांकन दाखिल किया।

चित्तूर में धारा 144 लागू चित्तूर नगर निगम चुनावों के नामांकन केंद्र के पास धारा 144 के तहत प्रतिबंधात्मक आदेश लागू किए गए हैं। टीडीपी की ओर से मेयर पद की उम्मीदवार कटारी हेमलता ने नामांकन दाखिल किया, जबकि वाईएसआरसीपी के उम्मीदवार चंद्रशेखर ने भी अपने नामांकन पत्र जमा किए।

संपादकीय

पंजाब में ड्रग माफिया का शिकंजा

पंजाब में नशे के माफिया का खतरनाक शिकंजा अनगिनत जिंदगियों को तबाह कर रहा है। एक ओर युवा नशे की गिरफ्त में आकर अपना भविष्य बर्बाद कर रहे हैं, तो दूसरी ओर इस बुराई के खिलाफ संघर्ष करने वाले साहसी सामाजिक कार्यकर्ताओं को अपनी जान गंवानी पड़ रही है। नशे के खिलाफ अभियान चला रहे प्रमुख सामाजिक कार्यकर्ता परविंदर सिंह झोटा की मंगलवार सुबह कथित तौर पर एक फार्मासिस्ट द्वारा हत्या किए जाने की घटना ने पूरे पंजाब में सनसनी फैला दी है। परविंदर के पिता ने अपने बेटे का अंतिम संस्कार करने से इनकार कर दिया और गुरुवार को पूरे राज्य में बंद का आह्वान किया। इस बंद को समाज के लगभग सभी वर्गों का व्यापक समर्थन मिला। कांग्रेस, भाजपा, शिरोमणि अकाली दल और वारिस पंजाब दे जैसे राजनीतिक संगठनों के साथ–साथ किसान संगठनों और धार्मिक संस्थाओं ने भी बंद का एकजुट होकर समर्थन किया। परविंदर सिंह स्वयं कभी नशे के आदी थे। लेकिन उन्होंने इस लत से छुटकारा पाकर अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव किया। उनका मानना था कि जब तक नशीले पदार्थों की अवैध बिक्री पर रोक नहीं लगाई जाएगी, तब तक युवाओं का भविष्य सुरक्षित नहीं हो सकता। इसी उद्देश्य से उन्होंने ‘फोर्स’ नामक संगठन के माध्यम से नशे के खिलाफ आंदोलन शुरू किया। वे अपने मोबाइल फोन से अवैध रूप से नशीले पदार्थ बेचने वालों की गतिविधि ायों के वीडियो बनाते और उन्हें फेसबुक पर प्रसारित करते थे। दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि मंगलवार को ऐसी ही गतिविधियों का सीधा प्रसारण करते समय उनकी हत्या की घटना भी कैमरे में रिकॉर्ड हो गई। इस घटना से पूरे पंजाब में व्यापक जनाक्रोश फैल गया। दूसरी ओर, सोशल मीडिया इन्फ्लुेंसर मैड संधू की हत्या के पीछे भी अंतरराज्यीय ड्रग माफिया का हाथ होने की आशंका जताई जा रही है। इन दोनों घटनाओं में डिजिटल प्लेटफॉर्म की भूमिका सामने आई है। एक ओर स्थानीय स्तर पर नशीले पदार्थों का अवैध कारोबार बेखुफ चल रहा है, तो दूसरी ओर माफिया गिरोह खुलेआम हत्याओं को अंजाम दे रहे हैं।

इससे आम जनता की सुरक्षा गंभीर खतरे में पड़ गई है। नशीले पदार्थों की तस्करी में कुछ पुलिसकर्मियों का कथित संलिप्तता और पुलिसकर्मियों पर हो रहे जानलेवा हमले भी चिंता का विषय बन गए हैं। महज दो सप्ताह के भीतर तरन्तारन और अमृतसर जिलों में दो सहायक उपनिरीक्षकों (एएसआई) को गोली मारे जाने की घटनाएं सामने आईं। इसके अलावा पंजाब पुलिस के कांस्टेबल करणदीप सिंह का बड़ी मात्रा में हेरोइन के साथ पकड़ा जाना भी गंभीर चिंता का विषय है। राज्य में चाहे किसी भी राजनीतिक दल की सरकार रही हो, ड्रग माफिया अपनी गतिविधियां लगातार जारी रखे हुए है। हालांकि वर्तमान आम आदमी पार्टी सरकार पर कानून–व्यवस्था बनाए रखने में गंभीर विफलताओं के आरोप लग रहे हैं। वर्ष 2025 में पंजाब सरकार ने नशीले पदार्थों की तस्करी पर रोक लगाने के लिए ‘युद्ध नशियां विरुद्ध’ अभियान शुरू किया। इस अभियान के तहत 68,850 कथित नशा तस्करी को गिरफ्तार किया गया और लगभग 319 करोड़ रुपये की संपत्तियां जब्त की गईं। इसके बावजूद नशे की समस्या समाप्त नहीं हो सकी। विशेष रूप से युवाओं में बेरोजगारी, निराशा और भविष्य को लेकर बढ़ती अनिश्चितता उन्हें नशे की ओर धकेल रही है। राज्य के अनेक युवाओं में यह धारणा बन गई है कि पंजाब में रोजगार के पर्याप्त अवसर नहीं हैं और बेहतर भविष्य के लिए विदेश जाना ही एकमात्र रास्ता है। अभिभावक भी अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए उन्हें विदेश भेजने पर बड़ी रकम खर्च करने को तैयार रहते हैं। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) द्वारा 2017दृ 18 में किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार, पंजाब में 10 से 75 वर्ष आयु वर्ग की आबादी के लगभग 1.28 प्रतिशत लोग ओपिओइड श्रेणी के नशीले पदार्थों पर निर्भर थे। चंडीगढ़ स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट एंड कम्युनिकेशन द्वारा सीमावर्ती जिलों के 1,527 लोगों पर किए गए एक अध्ययन में सामने आया कि पंजाब में नशे की समस्या मुख्य रूप से 15 से 35 वर्ष आयु वर्ग के युवाओं को प्रभावित कर रही है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि नशे से प्रभावित लोगों में लगभग 70 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों से संबंधित थे। इन्हीं परिस्थितियों में परविंदर झोटा ने युवाओं को नशे के संकट से बचाने के लिए आंदोलन शुरू किया था। उन्होंने न केवल युवाओं में नशे के खिलाफ जागरूकता पैदा की, बल्कि कई ग्राम पंचायतों से नशीले पदार्थों के खिलाफ प्रस्ताव भी पारित करवाए। उनकी ये गतिविधियां ड्रग माफिया के अवैध कारोबार के लिए बड़ी चुनौती बन रही थीं। दरअसल, नशीले पदार्थों की समस्या केवल सार्वजनिक स्वास्थ्य से जुड़ा विषय नहीं है। यह अवैध अर्थव्यवस्था, गैंगस्टर नेटवर्क, सीमा पार से होने वाली तस्करी, सुनियोजित हत्याओं और सार्वजनिक सुरक्षा व्यवस्था की कमजोरियों से जुड़ा एक गंभीर सामाजिक एवं कानूनी संकट है। दशकों तक हिंसक घटनाओं का सामना कर चुके पंजाब के लोग नहीं चाहते कि राज्य एक बार फिर ‘चिट्ठा’ के दौर जैसी सरकार ने नशे की समस्या पर नियंत्रण के लिए दोषेरी रणनीति तैयार की है। हालाकि यह रणनीति जमीनी स्तर पर कितनी प्रभावी साबित होगी, यह अभी स्पष्ट नहीं है। ड्रग माफिया जैसी गंभीर सामाजिक बुराई का मुकाबला तभी संभव है, जब परविंदर झोटा जैसे साहसी सामाजिक कार्यकर्ता आगे आकर जनता में जागरूकता पैदा करें और समाज को एकजुट करें। इसके लिए समाज के सभी वर्गों का पूर्ण सहयोग और समर्थन आवश्यक है। नशे के खिलाफ लड़ाई केवल सरकार या पुलिस की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है।

जंतर–मंतर के नोट्स

दिल्ली के समाचार पत्रों में प्रकाशित रिपोर्टों के अनुसार, जंतर–मंतर पिछले 33 वर्षों से देश के नागरिकों के लिए विरोध ा प्रदर्शन का प्रमुख मंच बना हुआ है। देश के विभिन्न क्षेत्रों और समाज के अलग–अलग वर्गों के लोग अपनी समस्याओं को केंद्र सरकार के ध्यान में लाने के लिए यहां शांतिपूर्ण ढंग से विभिन्न प्रकार के प्रदर्शन करते रहे हैं। इन प्रदर्शनों के कारण न तो सरकार को कोई विशेष समस्या हुई और न ही प्रदर्शनकारियों को सरकार की ओर से किसी गंभीर परेशानी का सामना करना पड़ा। जब कभी किसी कारणावश प्रदर्शनकारियों को वहां से हटाना आवश्यक समझा गया, तब प्रशासन ने कार्रवाई भी की। ऐसे अवसरों पर प्रदर्शनकारी गिरफ्तार होकर वहां से हट गए, लेकिन उन्होंने हिंसा का सहारा नहीं लिया। इन 33 वर्षों के दौरान केंद्र और दिल्ली नगर निगम में शासन करने वाली पार्टियों में भारतीय जनता पार्टी भी शामिल रही है। भाजपा ने भी वहां आंदोलन किए हैं। लेकिन इस महीने की 11 तारीख को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने ऐसा कदम उठाया, जो इससे पहले किसी सरकार ने नहीं उठाया था। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के प्रशासनिक अधिकार क्षेत्र में कार्यरत दिल्ली पुलिस आयुक्त अनुराग कुमार ने जंतर–मंतर पर विरोध प्रदर्शनों को प्रतिबंधित कर दिया।

पहले इंडिया गेट पर होने वाले विरोध प्रदर्शनों के स्थान पर जंतर–मंतर को निर्धारित प्रदर्शन स्थल घोषित करने वाले भी तत्कालीन प्रशासनिक अधिकारी ही थे। लेकिन अब, लेखक के अनुसार, सरकार अपने निर्णयों और नीतियों के खिलाफ जनता के शांतिपूर्ण विरोध को सहन नहीं कर पा रही है। उसे आशंका है कि यदि ऐसे प्रदर्शन जारी रहे, तो उसकी राजनीतिक सत्ता के लिए खतरा पैदा हो सकता है। इसी भय के कारण जंतर–मंतर को प्रदर्शनकारियों के लिए बंद कर दिया गया। प्रदर्शनकारियों की ओर से वकीलों ने इस निर्णय को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती दी। न्यायािषाओं ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे विरोध प्रदर्शनों के लिए कम से कम कोई वैकल्पिक स्थान उपलब्ध कराएं। न्यायालय के आदेश की अदहेलना नहीं कर सकने के कारण पुलिस अधिकारियों ने तीन वैकल्पिक स्थानों की घोषणा की। लेकिन इन स्थानों के चयन में भी, आलोचकों के अनुसार, प्रदर्शन करने की सुविधा वैभव के बजाय उन्हें रोकने की मंशा दिखाई देती है। ये तीन स्थान हैंकृ जंतर–मंतर से लगभग चार

किलोमीटर दूर रामलीला मैदान, करीब 12 किलोमीटर दूर सीबीडी ग्राउंड और लगभग 18 किलोमीटर दूर बुराड़ी मैदान। इन तीनों वैकल्पिक स्थलों की परिस्थितियों पर गौर करने से स्पष्ट होता है कि वे विरोध प्रदर्शनों के लिए न तो पूरी तरह उपयुक्त हैं और न ही सुविधाजनक। इससे यह आशंका पैदा होती है कि मोदी सरकार का वास्तविक उद्देश्य विरोध प्रदर्शनों को होने ही नहीं देना है। वकीलों ने इन वैकल्पिक स्थलों से जुड़ी कठिनाइयों को सर्वोच्च न्यायालय के सज्ञान में लाते हुए जंतर–मंतर को पुनः प्रदर्शन स्थल के रूप में बहाल करने की मांग की है। इस याचिका पर आगे क्या निर्णय होगा, यह अभी स्पष्ट नहीं है। इस बीच कोंकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के नेतृत्व ने प्रतिबंध का खुलकर विरोध करने की घोषणा की है। उसका कहना है कि जंतर–मंतर किसी की निजी संपत्ति नहीं है। प्रतिबंध का उल्लंघन करते हुए युवक और युवतियां वहां अलग–अलग स्थानों पर छोटे–छोटे शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे हैं। आरोप है कि पुलिस उन्हें प्रतिदिन हिरासत में लेकर मारपीट कर रही है। 13 तारीख को आशुतोष रांका और सौरव दास को गिरफ्तार कर पांच दिनों की न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। वर्तमान आंदोलन शुरू होने के बाद यह पहला अवसर बताया जा रहा है, जब प्रदर्शनकारियों को इतने दिनों की न्यायिक हिरासत में भेजा गया। पूरी तरह शांतिपूर्ण प्रदर्शन करने वालों पर कानून–व्यवस्था भंग करने के आरोप लगाए गए। पिछले कुछ महीनों से मोदी सरकार के कामकाज और उसके रवैये पर नजर रखने वालों के लिए यह घटना आश्चर्यजनक नहीं थी।

वैकल्पिक प्रदर्शन स्थलों की समस्याएं

अब अधिकारियों द्वारा घोषित वैकल्पिक प्रदर्शन स्थलों की परिस्थितियों पर विचार करें। जंतर–मंतर सहित किसी भी स्थान पर विरोध प्रदर्शन करने के लिए पुलिस की अनुमति आवश्यक होती है। लेकिन पहला बड़ा अंतर यह है कि जंतर–मंतर पर प्रदर्शन करने निःशुल्क था, जबकि अन्य स्थानों पर प्रदर्शन हजारां रुपये शुल्क देना पड़ता है। दूसरा अंतर यह है कि रामलीला मैदान को छोड़कर बाकी दोनों स्थान काफी दूर हैं। तीसरा, जंतर–मंतर विशेष रूप से विरोध प्रदर्शनों के लिए निर्धारित स्थल था, जबकि अन्य तीन मैदानों में विवाह समारोह, उत्सव और विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं। ऐसी स्थिति में इन मैदानों



को काफी पहले से बुक कराना आवश्यक होता है। चौथा, जंतर–मंतर के विपरीत इन स्थानों पर बहुत सीमित अवधि के लिए ही बुकिंग की सुविधा मिलती है। पांचवां, प्रदर्शनकारियों के लिए भोजन, शौचालय और कम से कम अस्थायी आश्रय जैसी बुनियादी सुविधाएं भी वहां पर्याप्त रूप से उपलब्ध नहीं हैं। छठा, जंतर–मंतर और रामलीला मैदान को छोड़कर बाकी दोनों स्थानों तक पहुंचना निजी वाहन न रखने वाले लोगों के लिए कठिन है। सातवां, कोंकरोच जनता पार्टी के आंदोलन में युवतियां, बुजुर्ग और आम नागरिक अभूतपूर्व संख्या में भाग ले रहे हैं। वकील भी अक्सर अदालतों से सीधे प्रदर्शन स्थल पहुंचते हैं। अब इन सभी लोगों के लिए आंदोलन में भाग लेना और अधिक कठिन हो जाएगा। ऐसे असुविधाजनक वैकल्पिक स्थलों को चुनने के पीछे क्या उद्देश्य हो सकता है, इसका अनुमान कोई भी लगा सकता है। सीधे शब्दों में कहें तो, लेखक के अनुसार, सरकार चाहती है कि युवाओं के नेतृत्व में होने वाले विरोध प्रदर्शन पूरी तरह बंद हो जाएं। ट्रैक्टरों में तंबू और भोजन लेकर पहुंचने वाले किसान संगठनों जैसे समूह शायद ऐसे स्थानों पर प्रदर्शन कर सकें, हालांकि उनके लिए भी प्रतिदिन हजारां रुपये शुल्क देना आसान नहीं होगा। लेखक का आरोप है कि मोदी सरकार विरोध प्रदर्शनों से इतनी भयभीत हो गई है कि वह इस प्रकार के अलोकतांत्रिक कदम उठा रही है। जिस राजनीतिक दल ने कभी 1975 के आपातकाल के खिलाफ व्यापक आंदोलन किया था, वही आज ऐसी परिस्थितियां पैदा कर रहा है, जो लोगों को उसी आपातकाल की याद दिलाती हैं। अपनी सत्ता बचाने की चिंता में सत्तारूढ़ दल

भयभीत होकर व्यवहार कर रहा है। लेखक के अनुसार, यह भय इस बात का संकेत है कि सत्तारूढ़ दल की राजनीतिक स्थिति लगातार कमजोर हो रही है। सीजेपी नेता अभिजीत दीपके बार–बार प्रधानमंत्री मोदी को एक ‘‘कायर तानाशाह’’ बता रहे हैं। लेख में कुछ शोधकर्ताओं के इस विचार का भी उल्लेख किया गया है कि अनेक तानाशाह भीतर से भयभीत होते हैं।

लोकतंत्र के प्रतीक के रूप में जंतर–मंतर
जंतर–मंतर दशकों से भारतीय लोकतंत्र के महत्वपूर्ण प्रतीकों में से एक रहा है। लेकिन वर्तमान जैसी परिस्थितियां पहले कभी नहीं देखी गईं अतीत में वहां होने वाले विरोध प्रदर्शन मुख्यतः किसी विशेष वर्ग या समुदाय की विशिष्ट समस्याओं और मांगों से संबंधित होते थे। हाल के नीट (छम्प्ट) विरोध प्रदर्शन भी इसी श्रेणी में आते हैं। लेकिन मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण, यानी एसआईआर(ॅन), का मामला इससे बिल्कुल अलग है। लेखक के अनुसार, सत्तारूढ़ दल एसआईआर प्रक्रिया को अपनी राजनीतिक सत्ता के अस्तित्व से जोड़कर देख रहा है। दूसरी ओर, आम नागरिक, सीजेपी जैसे युवा संगठन और विपक्षी दल इसे देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था के अस्तित्व से जुड़ा प्रश्न मान रहे हैं। इस प्रकार यह विवाद एक बुनियादी राजनीतिक संघर्ष का रूप लेता जा रहा है। लेखक के अनुसार, सत्तारूढ़ दल की चिंताओं के प्रमुख पहलू हैं। पहला, अपनी वर्तमान राजनीतिक सत्ता को हर हाल में सुरक्षित रखना। दूसरा और अधिक महत्वपूर्ण पहलू संघ प्रक्रिया के दीर्घकालिक उद्देश्य से जुड़ा है। भाजपा संघ परिवार का हिस्सा है और लेखक के अनुसार, उसका दीर्घकालिक

लक्ष्य हिंदू राष्ट्र की स्थापना करना है। सत्तारूढ़ दल को यह आशंका सता रही है कि वर्तमान घटनाक्रम इस उद्देश्य की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न कर सकता है। यह बाधा स्थायी होगी या नहीं, इस बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन अस्थायी रुकावट की संभावना भी सत्तारूढ़ दल को चिंतित कर रही है। लेखक का तर्क है कि इन्हीं दो आशंकाओं के कारण सरकार का रवैया लगातार अधिाक सत्तावादी होता जा रहा है। इस राजनीतिक संकट से निकलने का रास्ता नहीं सूझने के कारण सत्तारूढ़ नेतृत्व का भय और उसकी दमनकारी प्रवृत्तियां बढ़ती जा रही हैं।

पुलिस कार्रवाई और दमन के आरोप
लेख के अनुसार, सरकार की इन कार्रवाइयों से केवल युवा पीढ़ी ही नहीं, बल्कि देश का नागरिक समाज और पूरी दुनिया भी स्तब्ध है। आरोप है कि पुलिस सर्वोच्च न्यायालय परिसर तक पहुंच गई और वहां वकीलों को हिरासत में लिया, उन्हें जमीन पर घसीटा तथा उनके साथ मारपीट की।

लेख में संसद सदस्यों पर हमले करने, दशकों तक देश की सेवा करने वाले वरिष्ठ अधिकारियों, बुद्धिजीवियों, लेखकों और कलाकारों को धक्का देकर गिराने जैसे आरोप भी लगाए गए हैं। लेखक का दावा है कि ऐसी घटनाएं आपातकाल के दिनों में भी नहीं देखी गई थीं। लेख के अनुसार, इन लोगों ने किसी कानून का उल्लंघन नहीं किया था। वे केवल जंतर–मंतर पर शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे युवाओं के समर्थन में खड़े हुए थे। पिछले 33 वर्षों से शांतिपूर्ण विरोध ा प्रदर्शनों का मंच रहे जंतर–मंतर पर कथित पुलिस दमन की घटनाओं को लेखक

लोकतांत्रिक भारत के इतिहास का एक भयावह अध्याय मानते हैं। उनके अनुसार, ये घटनाएं भयग्रस्त सत्तावादी शासन की पहचान बनती जा रही हैं। ऐसी अनेक घटनाएं सामने आ चुकी हैं, जबकि कई घटनाएं संभवतः सार्वजनिक आरोपों में भी नहीं आई हैं। लेख में महिला प्रदर्शनकारियों और महिला पत्रकारों के साथ अभद्र व्यवहार, गाली–गलौज तथा शारीरिक हमलों के आरोप लगाए गए हैं। यह भी आरोप लगाया गया है कि प्रदर्शनकारियों पर हमले करवाने के लिए असामाजिक तत्वों को लगाया गया। अल्पसंख्यक समुदायों से संबंधिात पत्रकारों से उनका धर्म पूछकर उनके साथ गंभीर मारपीट करने के आरोप भी सामने रखे गए हैं। लेखक का आरोप है कि ऐसे कार्यों के लिए पुरुष पुलिसकर्मियों के साथ महिला पुलिसकर्मियों को भी उकसाया जा रहा है। देश और विदेश में हो रही आलोचनाओं के बावजूद इन गतिविधियों को जारी रखने तथा सर्वोच्च न्यायालय को निर्देशों की भी अनदेखी करने के आरोप लगाए गए हैं। असहमति की आवाज को दबाने के लिए धमकी, बल प्रयोग और अमानवीय व्यवहार अपनाए जाने की बात भी लेख में कही गई है। लेखक के अनुसार, जंतर–मंतर से जुड़े वर्तमान घटनाक्रम में देश जिन विचलित करने वाले दृश्यों को देख रहा है, वे सत्तावाद का केवल एक पहलू हैं। इसके अन्य पहलू इतने अधिक हैं कि उनकी पूरी सूची तैयार करना भी कठिन है। अंत में लेखक का निष्कर्ष है कि इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि भयभीत तानाशाह कितना भी कठिन हैं, अत्याचार का सहारा लेते हैं, उतनी ही तेजी से अपने पतन की ओर बढ़ते हैं।

कोयले के लिए ‘रामप्पा’ की बलि चढ़ेगी?

तेलंगाना सरकार राज्य को वैश्विक निवेश के प्रमुख केंद्र के रूप में स्थापित करने की तैयारी कर रही है। आगामी 7, 8 और 9 दिसंबर को हैदराबाद में आयोजित होने वाले ‘ग्लोबल समिट–2.0’ में राज्य की औद्योगिक प्रगति और निवेश की संभावनाओं के साथ–साथ उसके समृद्ध इतिहास, संस्कृति और कला वैभव को दुनिया के सामने प्रस्तुत करने की व्यापक तैयारियों का जा रही है। इस संदर्भ में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल रामप्पा मंदिर तेलंगाना के गौरव का प्रतीक बनने जा रहा है। लेकिन सवाल यह है कि दुनिया को रामप्पा की महानता दिखाने की तैयारी कर रही सरकार क्या उसके भविष्य को लेकर उठ रही चिंताओं का जवाब दे पाएगी? एक ओर काकतीय राजवंश की अदभुत स्थापत्य कला को अंतरराष्ट्रीय मंच पर प्रदर्शित करने के प्रयास हो रहे हैं, तो दूसरी ओर रामप्पा के निकट प्रस्तावित ओपनकास्ट कोयला खदान के संभावित

प्रभावों को लेकर स्थानीय लोग चिंतित हैं। यही विरोधाभास एक महत्वपूर्ण प्रश्न खड़ा करता है: रामप्पा की महानता को दुनिया के सामने प्रस्तुत करना जितना जरूरी है, क्या उससे भी अधिाक जरूरी उसकी रक्षा करना नहीं है? तेलंगाना के मुलुगु जिले के वेंकटापुर में सिंगरेणी कोलियरीज कंपनी लिमिटेड (एससीसीएल) द्वारा प्रस्तावित पी.वी. नरसिम्हा राव (पीवीएनआर) ओपनकास्ट कोयला खदान कोई छोटी परियोजना नहीं है। केंद्रीय पर्यावरण मूल्यांकन अभिलेखों के अनुसार, इस परियोजना में प्रतिवर्ष 25 लाख टन कोयला उत्पादन का प्रस्ताव है, जबकि अधिकतम उत्पादन क्षमता 37.5 लाख टन निर्धारित की गई है। खदान के लिए प्रस्तावित लीज क्षेत्र लगभग 1,071 हेक्टेयर है। मार्च 2021 में केंद्रीय पर्यावरण मूल्यांकन समिति की बैठक के विवरण में उल्लेख किया गया था कि इस परियोजना से 931 लोगों को रोजगार मिलने की संभावना है।

कोयले से बिजली उत्पादन, औद्योगिक गतिविधियों, रोजगार और सरकारी राजस्व में लाभ हो सकता है। इन फायदों को नकारा नहीं जा सकता। लेकिन आर्थिक लाभों के साथ–साथ पर्यावरण और स्थानीय समुदायों को उठाने पड़ने वाले सामाजिक तथा आर्थिक नुकसान का भी आकलन करना आवश्यक है। शिप्टकारों की असाधारण प्रतिभा का प्रमाण हैं। मंदिर के साथ–साथ रामप्पा झील, आसपास के गांव और स्थानीय जीवन परंपराएं भी इस क्षेत्र की विशिष्ट पहचान का हिस्सा हैं। रिपोर्टों के अनुसार, प्रस्तावित खदान रामप्पा मंदिर और झील से लगभग पांच किलोमीटर दूर स्थित है। हालांकि केवल दूरी के आधार पर न तो खतरे को प्रमाणित किया जा सकता है और न ही सुरक्षा की गारंटी दी जा सकती है। वास्तविक स्थिति का पता लगाने के लिए भूगर्भीय संरचनाओं, भूजल प्रवाह, खनन

विस्फोटों के प्रभाव, झील के मिट्टी के तटबंध की स्थिरता और आसपास की अन्य खदानों के संयुक्त प्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी कर्नाटक (एनआईटीके), सूरतकल के आधिकारिक अभिलेखों के अनुसार, सिंगरेणी के प्रायोजन में वर्ष 2020 में वेंकटापुर की प्रस्तावित खदान से उत्पन्न होने वाले भू–कंपनों पर अध्ययन किया गया था। इस अध्ययन का उद्देश्य रामप्पा मंदिर के संबंध में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) से अनापत्ति प्रमाणपत्र प्राप्त करने तथा खान सुरक्षा महानिदेशालय (डीजीएमएस) की अनुमति प्रक्रिया के लिए तकनीकी आध्ाार उपलब्ध कराना था। इसी प्रकार, राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी अनुसंधान संस्थान (नरी) ने अपने आधिकारिक अभिलेखों में उल्लेख किया है कि वर्ष 2021 से 2023 के बीच प्रस्तावित पीवीएनआर और केटीके ओसी–प्प खदानों के कारण रामप्पा की ऐतिहासिक ध

ारोहर पर पड़ने वाले संभावित प्रभावों का अध्ययन किया गया। लेकिन केवल अध्ययन किए जाने से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि सभी खतरे समाप्त हो गए हैं। इन अध्ययनों की पूरी रिपोर्ट, माप संबंधी आंकड़े, अपनाए गए मानक, अध्ययन की सीमाएं और सिफारिशें सार्वजनिक रूप से जांची जानी चाहिए। वर्ष 2023 में द न्यू इंडियन एक्सप्रेस में प्रकाशित एक समाचार के अनुसार, नरी और एनआईटीके के अध्ययनों के आधार पर एएसआई ने समीक्षा की थी। समाचार में बताया गया था कि क्षेत्रीय माप के दौरान निर्धारित सीमाओं से अधिक प्रभाव नहीं पाए गए और खनन कार्यों पर कोई आपत्ति नहीं होने की बात सामने आई थी। उसी समाचार के अनुसार, पालमपेट विशेष विकास प्राधिकरण (पीएसडीए) और काकतीय हेरिटेज ट्रस्ट के साथ विचार–विमर्श के बाद भू–कंपनों तथा मंदिर की सैंड–बॉक्स नींव पर भूजल के संभावित प्रभाव जैसे विषयों से

जुड़े 15 तकनीकी प्रश्नों के उत्तर मांगे गए थे। इन तथ्यों को संतुलित दृष्टिकोण से देखना आवश्यक है। कुछ स्थानों पर दर्ज किए गए कंपन निर्धारित सीमा के भीतर होने के बावजूद दीर्घकालिक प्रभावों और भूजल की स्थिति में संभावित बदलावों को लेकर प्रश्न बने रह सकते हैं। वहीं, केवल कुछ प्रश्नों के उत्तर उपलब्ध न होने के आध्ाार पर यह भी नहीं कहा जा सकता कि मंदिर को निश्चित रूप से नुकसान पहुंचेगा। इसीलिए नरी और एनआईटीके की पूरी रिपोर्टों के साथ–साथ एएसआई के निर्णय से संबंधित मूल दस्तावेज भी जनता के लिए उपलब्ध कराए जाने चाहिए। आलोचक कई महत्वपूर्ण सवाल उठा रहे हैं। क्या खनन गतिविधियों से रामप्पा झील के मिट्टी के तटबंध ा की स्थिरता प्रभावित हो सकती है? क्या जमीन के भीतर प्राकृतिक भूगर्भीय संरचनाओं और चट्टानों की दरारों से होकर बहने वाले पानी की दिशा बदल सकती है?



‘धुरंधर:द रिवेज’ में कैमियो के लिए यामी गौतम ने चार्ज की थी मोटी फीस? अब किया सबसे बड़ा खुलासा



आदित्य धर की 'धुरंधर: द रिवेज' इस साल की सबसे बड़ी फिल्म है, जिसके बराबर तो छोड़िए, इस तरह कोई दूसरी फिल्म नहीं कमा पाई। बेशक 'हनुमान अंश' को सबसे ज्यादा फायदा हुआ हो, पर अब भी टॉप पर रणवीर सिंह की फिल्म है। अगर आपने थिएटर में जाकर फिल्म देखी हो तो आपको पता होगा कि शुरुआत में यामी गौतम को स्पेशल थैंक्स कहा गया है। जी हां, उनका फिल्म में कैमियो भी था, जहां वो नर्स बनकर रणवीर सिंह के सामने उनके दुश्मनों का काम तमाम करती दिख रही हैं। उनके रोल को काफी पसंद किया गया था। उस वक़्त ऐसी अफवाहें भी उड़ी थी कि उन्होंने मोटी फीस इस पिक्चर के लिए ली है।

पर सच यह है कि एक्ट्रेस ने कोई फीस चार्ज नहीं की। दरअसल यामी गौतम की फिल्म 'नई नवेली' रिलीज हो चुकी है, जिसका फिलहाल वो प्रमोशन कर रही हैं। हाल ही में यामी 'कोन होनार करोडपती' शो में पहुंचीं, वहां उन्होंने बताया कि क्या उन्होंने 'धुरंधर: द रिवेज' में अपने कैमियो के लिए कोई फीस ली थी। सोनी लिव के ऑफिशियल इंस्टाग्राम पेज पर आने वाले एपिसोड का एक प्रोमो जारी किया गया है। इस क्लिप में, होस्ट माधुरी दीक्षित ने यामी को बताया कि उन्होंने 'धुरंधर: द रिवेज' देखी है। और उन्हें यह बहुत पसंद आई।

इसके बाद उन्होंने इस एक्शन फिल्म में यामी के कैमियो का जिक्र किया। और पूछा कि क्या उन्हें इस रोल के लिए पैसे मिले थे, या फिर उनके पति ने बस उनसे फिल्म का हिस्सा बनने के लिए कहा था? इस पर यामी गौतम ने कहा कि, "मैंने कहीं पढ़ा कि मुझे इस कैमियो के लिए बहुत बड़ा चेक मिला है। और मैं सोच में पड़ गई कि यह क्या है? लेकिन मुझे लगता है कि कुछ चीजें अनमोल होती हैं। आदित्य का यह कहना बहुत प्यारा था कि 'यामी, मैं चाहता हूँ कि तुम बस गुड लक के लिए मेरी फिल्म में आओ। और छा जाओ। लेकिन इसमें बहुत मजा आया। बेहतरीन डायरेक्टर्स में से एक के डायरेक्शन में काम करना ही मेरी फीस थी।"

माधुरी ने की यामी गौतम की तारीफ

इसके बाद माधुरी ने यामी गौतम को कहा कि, "धुरंधर: द रिवेज' में आपको देखना बहुत मजेदार था।" दरअसल फिल्म में यामी ने शाजिया बानो के तौर में एक छोटी सा किरदार निभाया है। वो एक नर्स है, जो असल में पाकिस्तान में काम कर रही एक अंडकवर भारतीय एजेंट है।

'होटल के कमरे में बात करने के लिए बुलाया था विद्या बालन से हुई थी गंदी डिमांड

बच निकलीं एक्ट्रेस

बॉलीवुड एक्ट्रेस विद्या बालन आज किसी पहचान की मोहताज हैं। उन्होंने अपनी बेहतरीन एक्टिंग और बेबाक अंदाज से इंडस्ट्री में अलग पहचान बनाई है, लेकिन इस मुकाम पर पहुंचने के लिए उन्होंने काफी स्ट्रगल किया है। विद्या बाल अपने करियर में कार्टिंग काउच का शिकार होते होते बाल बाल बच गई थीं। विद्या बालन ने कार्टिंग काउच से जुड़े एक इंसीडेंट के बारे में बताया था। एक्ट्रेस ने बताया था कि एक डायरेक्टर ने उन्हें होटल रूम में मिलने के लिए कहा था। चलिए जानते हैं उन्होंने क्या कहा था।

विद्या बालन ने क्या कहा?

ह्यूमन्स ऑफ़ बॉम्बे को दिए इंटरव्यू में विद्या ने कहा था, 'मैंने कभी भी कार्टिंग काउच का सामना नहीं किया है। मैं बहुत भाग्यशाली रही हूं। मैंने कार्टिंग काउच की बहुत कहानियां सुनी हैं और ये मेरे पेरेंट्स का सबसे बड़ा डर था। लेकिन मेरे साथ एक घटना घटी। मुझे याद है एक फिल्म के सिलसिले में मुझे डायरेक्टर से मिलना था। मैं उस वक़्त एक एड फिल्म की शूटिंग के लिए चेन्नई जा रही थी।' होटल के कमरे में बात करने के लिए बुलाया था। और', विद्या बालन से हुई थी गंदी डिमांड, बच निकलीं एक्ट्रेस

मिर्जापुर फिल्म की सफलता से बदली अभिनेत्री श्रिया की तकदीर, माता-पिता से मिली है बड़ी सीख

एक ही माध्यम पर काम करने से लोग सोच लेते हैं कि आप केवल उसी माध्यम में बंध गए हैं। यह मानना है अभिनेत्री श्रिया पिलगांवकर का, तभी उनका ध्यान अब सिनेमा की ओर है। वह कहती हैं कि मैंने अपने सफर की किसी से तुलना नहीं की है, कुछ चीजें हैं, जो मेरे मन मुताबिक नहीं भी हुई हैं, लेकिन मैं निराश नहीं हुई। जब एक के बाद एक वेब सीरीज कर रही थी, तो फिल्मों को एक्सप्लोर करना था, लेकिन तब नहीं हो पा रहा था। मुझे काम करना था और ओटीटी पर काम मिल रहा था। तब ऐसा था कि जो मिल रहा है, वह करते रहो। अब मैं फिल्मों पर फोकस कर रही हूँ, ऐसे में मिर्जापुर: द मूवी फिल्म का हिट होना मेरे लिए फायदेमंद है, क्योंकि इंडस्ट्री का नजरिया फिर बदलता है। ऑक्स ऑफिस पर सफलता जरूरी है। देखते हैं यह सफलता मेरे लिए क्या नए दरवाजे खोलेगी।

अपने माता-पिता को लेकर श्रिया ने खुलकर बात करते हुए बताया है- मैं उनके इन विचारों को सच साबित नहीं करना चाहती हूँ। जैसे ही फिल्मों पर ध्यान दिया, मिर्जापुर: द मूवी के बाद हैवान मिल गई, अब वीरदास के साथ एक हॉरर फिल्म भी कर रही हूँ। जब मेरे माता-पिता (सुप्रिया पिलगांवकर और सचिन पिलगांवकर) ने अपने अभिनय करियर की शुरुआत की थी, तो टीवी

'मैंने दरवाजा खुला छोड़ दिया'

विद्या ने आगे बताया था, 'एक दिन मुझे याद है कि मैं चेन्नई में थी और एक डायरेक्टर मुझसे मिलने आए। मैंने उन्हें कहा कि चलो कॉफी शॉप में बैठते हैं। तो वो जिद्द करने लगा कि वो मुझसे बात करना चाहता है और हमें कमरे में चलना चाहिए। मुझे समझ नहीं आया, क्योंकि मैं अकेली थी। लेकिन मैंने समझदारी से काम लिया।

जब हम कमरे में गए तो मैंने दरवाजा खुला छोड़ दिया और उसे पता था कि उसके पास एक ही ऑप्शन है कि कमरे से बाहर निकलने का। फिर वो पांच मिनट के अंदर चला गया।'

विद्या बालन को फिल्म से निकाला गया बाहर

उन्होंने आगे कहा था, 'इसलिए मैं सच में ये नहीं मानती कि मैंने कार्टिंग काउच एक्सपीरियंस किया। आज भी जब मैं इस बारे में बात कर रही हूँ तो ये घटना मेरे मन में आ गई।' इसके बाद विद्या ने हंसते हुए बताया कि उन्हें उस फिल्म से बाहर कर दिया गया था। उन्होंने कहा था, 'इसके बाद मुझे फिल्म से बाहर निकाल दिया गया।' होटल के कमरे में बात करने के लिए बुलाया था। और', विद्या बालन से हुई थी गंदी डिमांड, बच निकलीं एक्ट्रेस



और फिल्म ही थे, इसलिए उन्होंने इस स्तर का स्टारडम देखा है। आप अपने किरदारों से ही दर्शक कमा सकते हैं। उनके साथ अलग कनेक्शन था। अब अलग-अलग रास्ते खुल गए हैं।

ऐश्वर्या लक्ष्मी: जीवनसाथी कैसा होना चाहिए



नीति टेलर ने टॉलीवुड के काले सच का खुलासा किया मैंने उनका नंबर ब्लॉक कर दिया

एक नई फिल्म के लिए आया फोन कॉल एक नया मौका लेकर आना चाहिए था, लेकिन अभिनेत्री नीति टेलर के लिए यही वह वजह बनी, जिसकी वजह से उन्होंने फिल्मों से दूर होने का फैसला किया। टीवी स्टार नीति टेलर ने टॉलीवुड में काम करने के दौरान अपने साथ हुए 'कार्टिंग काउच' (काम के बदले यौन संबंध की मांग) के अनुभव के बारे में खुलकर बात की। उन्होंने बताया कि एक निर्देशक ने रोल देने के बदले उनसे शारीरिक संबंध बनाने की मांग की थी।

'हॉटरफ्लाई' को दिए एक इंटरव्यू में, अभिनेत्री ने बताया कि कैसे एक निर्देशक, जिनके साथ वह पहले काम कर चुकी थीं, उन्होंने एक नए प्रोजेक्ट के लिए उनसे संपर्क किया। नीति के अनुसार, बातचीत तब बहुत परेशान करने वाली हो गई, जब निर्देशक ने शर्त रखी कि रोल पाने के लिए उन्हें उनके साथ सोना होगा। नीति ने बताया कि इस मांग से वह पूरी तरह हैरान रह गई और उन्हें समझ नहीं आया कि क्या जवाब दें। बातचीत को आगे बढ़ाने के बजाय, उन्होंने तुरंत फोन काट दिया, निर्देशक का नंबर ब्लॉक कर दिया और अपनी मां को फोन करके पूरी घटना के बारे में बताया। उन्होंने याद करते हुए कहा, मैंने बस फोन काट दिया, उनका नंबर ब्लॉक कर दिया और अपनी मां को फोन किया। नीति ने बताया कि इस अनुभव ने फिल्मों में काम करने की उनकी इच्छा को बुरी तरह प्रभावित किया। उन्हें सबसे बड़ा झटका इस बात से लगा कि जिस व्यक्ति के साथ वह पहले काम कर चुकी थीं, उसी ने ऐसी धिनीनी मांग की। इंटरव्यू के दौरान अभिनेत्री ने उस निर्देशक का नाम नहीं बताया। जो दर्शक नीति को उनके टीवी किरदारों से जानते हैं, उन्हें बता दें कि तेलुगु सिनेमा में भी उनका एक छोटा सा करियर रहा है।



'मुझे कहा गया कि तुम्हारा करियर अब खत्म है' इंडस्ट्री से 4 साल दूरी बनाए रखने पर छलका रश्मि देसाई का दर्द

टीवी की जानी-मानी एक्ट्रेस रश्मि देसाई एक बार फिर छोटे पर्दे पर वापसी कर रही हैं। पिछले कुछ सालों से टीवी से दूर रही 40 साल की रश्मि ने स्टार प्लस के शो 'सयानी' से कमबैक किया है। हाल ही में रश्मि ने बताया कि आखिर उन्होंने काम से दूरी क्यों बनाई और इस दौरान उन्हें किन चुनौतियों का सामना करना पड़ा। उन्होंने यह भी कहा कि इंडस्ट्री में उन्हें कई बार कम आंका गया और उनके टैलेंट के बजाय उनके लुक पर ज्यादा ध्यान दिया गया।

अपने इस ब्रेक के दौरान उन्होंने न सिर्फ खुद पर काम किया, बल्कि इंडस्ट्री में अपने अनुभवों, लोगों की सोच और ऑनलाइन ट्रोलिंग को भी करीब से समझा। 'स्क्रीन' को दिए एक इंटरव्यू में रश्मि ने महिलाओं को इंडस्ट्री में

देखने के नजरिए, टीवी कलाकारों को कम आंकने की सोच और सोशल मीडिया पर होने वाली ट्रोलिंग पर भी खुलकर अपनी बात रखी। उनके बयान से साफ है कि उनके लिए यह ब्रेक सिर्फ काम से दूरी बनाने का फैसला नहीं था, बल्कि खुद को समझने और एक कलाकार के तौर पर आगे बढ़ने की तैयारी भी थी।

टीवी से ब्रेक लेने के बारे में रश्मि ने कहा, 'मैंने बीच में 3-4 साल तक काम करना बंद कर दिया था। मैंने एक गुजराती फिल्म की और 'हिसाब बराबर' नाम की एक फिल्म की। मैंने बहुत ज्यादा काम नहीं किया; मेरा मन ही नहीं था। मुझे टीवी के ऑफर मिले, लेकिन मैं उनसे जुड़ नहीं पाई, या शायद उस समय मैं तैयार नहीं थी। आमतौर पर, कोई शो करने के बाद मैं 3-4 साल के

लिए गायब हो जाती हूँ। मैं वास्तव में बहुत सी पुरानी चीजों को अपने अंदर से हटाना चाहती थी। मैंने कई वर्कशॉप कीं और खुद पर काम किया। एक अभिनेता के तौर पर आपको बहुत मेहनत करनी पड़ती है। जब आप कोई फिल्म करते हैं, तो आपको खुद पर काम करने का समय मिल जाता है, लेकिन टीवी एक लंबा कमिटमेंट है, जहां आप अनजाने में भी उसी किरदार को जी रहे होते हैं। इसलिए, ऐसी बहुत सी बातें थीं जिन्हें मैं अपने अंदर से मिटाना चाहती थी। यह मेरा अपना सफर था। मेरा काम करने का मन नहीं था। मुझे बस इतना लगा कि अगर मैं खुद किसी चीज से पूरी तरह सहमत नहीं हूँ, तो मैं अपने दर्शकों को भी कैसे यकीन दिला सकती हूँ?'

अनटाइटल्ड थ्रिलर: जान्हवी, श्रीलीला और सिद्धार्थ गुप्ता की फिल्म पर आया नया अपडेट, नैनीताल में शुरु हुई शूटिंग



बॉलीवुड में एक और बहुत ही यूनिक प्रोजेक्ट की शुरुआत हो चुकी है। इस नए और जबरदस्त कॉम्बिनेशन को देखने के लिए फैंस काफी एक्साइटेट हैं। बॉलीवुड एक्ट्रेस जान्हवी कपूर, साउथ की स्टार श्रीलीला और एक्टर सिद्धार्थ गुप्ता एक नई रोमांटिक थ्रिलर फिल्म के लिए एक साथ आ रहे हैं। इस अनाम फिल्म को लेकर अब एक नया और बड़ा अपडेट सामने आया है। फिल्म की कहानी दो औरतों और एक मर्द के बीच उलझे प्यार और सस्पेंस पर बनी है।

मेकर्स ने इस थ्रिलर प्रोजेक्ट के पहले शूटिंग शेड्यूल की शुरुआत खूबसूरत वादियों वाले शहर नैनीताल में ऑफिशियली कर दी है।

रिपोटर्स की मानें तो यह फिल्म एक सस्पेंस से भरी



रोमांटिक थ्रिलर है। कहानी में दो औरतों को एक ही शख्स से प्यार हो जाता है। इसके बाद रिश्तों में उलझन आती है और कहानी बेहद दिलचस्प मोड़ लेती है। फिल्म में सिर्फ प्यार और रोमांस ही नहीं बल्कि रिलेशनशिप के गहरे पहलुओं की झलक भी देखने को मिलेगी। रोमांस के साथ इसमें थ्रिलर वाली गहराई और जबरदस्त दिवस्ट शामिल हैं जो दर्शकों को बांधकर रखेंगे।

इस फिल्म को बड़े पर्दे पर उतारने के लिए दो मशहूर और पावरफुल प्रोड्यूसर्स एक साथ आई हैं। इस प्रोजेक्ट को एकता कपूर और गुनीत मोंगा कपूर मिलकर प्रोड्यूस कर रही हैं। वहीं इसके डायरेक्शन की कमान उमेश बिष्ट संभाल रहे हैं। उमेश बिष्ट इससे



पहले पगलैट जैसी कई बेहतरीन फिल्मों और शोज डायरेक्ट कर चुके हैं। जान्हवी कपूर, श्रीलीला और सिद्धार्थ गुप्ता तीनों की फिल्मी दुनिया अलग रही है, इसलिए इन तीनों की फ्रेश जोड़ी को पर्दे पर देखना काफी मजेदार होने वाला है। लेटेस्ट अपडेट के मुताबिक फिल्म की पूरी टीम नैनीताल पहुंच चुकी है और वहां शूटिंग का पहला शेड्यूल पूरे प्लान के मुताबिक शुरू हो गया है। फिलहाल मेकर्स ने फिल्म के नाम यानी टाइटल और बाकी कास्ट मेंबर्स की जानकारी को सीक्रेट रखा है। लेकिन फिल्म के इस फ्रेश कॉम्बिनेशन और सस्पेंस से भरी कहानी को देखकर लगता है कि यह प्रोजेक्ट आने वाले समय में सबसे बड़ी थ्रिलर फिल्मों में शामिल होगा।

फैशन वीक : तरुण तहिलियानी के कलेक्शन में दिखा अली फजल का रॉयल अंदाज शोस्टॉपर बन बिखेरा जलवा

तेक्म फैशन वीक 2026 की शुरुआत हो गई है और बीते दिन गुरुवार को मशहूर फैशन डिजाइनर तरुण तहिलियानी ने नई दिल्ली के ताज पैलेस में आयोजित इस इवेंट में अपने ब्रांड तसवा का नया मैसबियर कलेक्शन पेश किया। इसमें बॉलीवुड अभिनेता अली फजल उनके शोस्टॉपर बनकर रैंप पर चले और अपने अंदाज से सबका ध्यान खींचा। इस कलेक्शन में भारतीय शायिों के लिए कई तरह के कपड़े पेश किए गए। इसमें पारंपरिक भारतीय कारीगरी को खास जगह दी गई, साथ ही व्यक्तिगत पसंद और आधुनिक अंदाज को भी ध्यान में रखा गया। तरुण ने इस कलेक्शन को टी ऑफ लाइफ, लिप्पन आर्ट की बारीक कलाकारी, पैसले के घुमानदार डिजाइनों से प्रेरणा लेकर तैयार किया। अली फजल ने तसवा के लिए रैंप पर अपने सहज अंदाज और आकर्षक लुक से शोस्टॉपर की भूमिका को बेखूबी निभाया।

अभिनेता हाथीदांत जैसे सफेद रंग के अंगरखा में नजर आए। इसके साथ उन्होंने बंदगला और कढ़ाई वाली स्टोल पहनी थी। शो के लास्ट में अली फजल, तरुण तहिलियानी और अन्य मॉडल्स के साथ कलेक्शन का जश्न मनाते नजर आए। उन्होंने डांस करके शो को खत्म किया। इस दौरान ब्रांड की टीम भी शामिल हुई। शो के बाद पत्रकारों से बात करते हुए अली फजल ने डिजाइनर के कपड़े पहनने पर खुशी जताई। उन्होंने अपने पहनावे में अलग-अलग तत्वों के मेल की भी तारीफ की।